Written by नरि्मल पाठक
Monday, 10 October 2016 15:58

: □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ : □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ : □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ :

□□□□□□ □□□□

□□ □□□□□□□□ :चौदह साल के लंबे संघर्ष के बाद वह कई लोगों के लि उम्मीद की किरण बन गई है। अपने बेटे के हत्यारों को सजा दिलाने के लि नीलम कटारा ने जो लंबी कानूनी ल ाई ल ी, वह उनके जज्बे को तो बताती ही है, व्यवस्था के प्रति हमारी आस्था भी ब ाती है। नीतीश कटारा हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आ जाने के बाद जब नीलम कटारा अपने अगले सफर की तैयारी कर रही है, तो उनसे बातचीत की दैनिक हिन्दुस्तान के राजनीतिक संपादक नरि्मल पाठक ने।

- नीतीश कटारा हत्याकांड के मामले में सुप्रीम कोर्ट का जो फैसला आया है, उसका असर कहां तक प ेगा?

फैसले के बाद मुझे ऐसे बहुत से लोगों की तरफ से भी प्रतिक्रियाएं मिली हैं, जिन्हें मैं जानती तक नहीं। यह केवल कानूनी ल ाई की वजह से नहीं। लोगों के जीवन में कई तरह के संघर्ष हैं। लोग कई बार छोटे-छोटे मसलों पर भी परेशान हो जाते हैं। वे अब मुझसे बात करते है और कहते हैं कि कैसे मैंने उनका मनोबल ब ाया है, उन्हें प्रेरणा दी है। कुछ समय पहले क रेस्तरां में क पति अपनी 12 वर्ष की बेटी को मेरे पास ला और कहा कि यह आपसे मिलना चाहती थी। उस बच्ची ने बताया कि किस तरह वह इस केस में दिलचस्पी ले रही थी। ऐसे बहुत से किस्से हैं।

- जिस तरह के लोग इस मामले में शामिल थे, उसे देखते हु इतनी लंबी ल ाई ल ना आसान नहीं था। कहां से ताकत मिली आपको?

पता नहीं... दैवीय ताकत ही होगी कोई। मैंने तो कभी परेशानी देखी ही नहीं थी। बचपन में, स्कूल में, प ाई से लेकर शादी होने और बच्चों के बड़े होने तक कभी किसी दिक्कत का सामना करना ही नहीं प ा था। और अचानक क दिन पूरी दुनिया ही बदल गई। मुझे लगता है कि मैंने जिस हाल में अपने बेटे (लाश) को देखा, वह क्षण था, जब मुझे लगा कि मैं अगर टूट गई, तो इस बच्चे को न्याय नहीं मिलेगा। जब वह घर से निकला था, तो क शादी के समारोह में जाने के लि पूरी तरह सज-धजकर निकला था। और यहां... मैं वहां गई थी शिनाख्त के लि और मुझे आधा मिनट भी नहीं लगा पहचानने में। दृश्य देखकर मैं हिल गई थी, मेरे पांव कांपने लगे थे। लेकिन फिर मैंने सोचने में जरा भी देर नहीं की। वह खुद भी कहीं अन्याय होते देखता, तो परेशान हो जाता था। मैंने सोचा, उसके लि ल ना प ेगा। और फिर किसी दूसरे के बच्चे के साथ ऐसा न हो। मैं तो घर से बाहर के हर काम के लि हमेशा अपने पति पर निर्भर रही। इसलि मुझे लगता है कि भगवान ने ही मुझे शक्ति दी। पोस्टमार्टम, डी न टेस्ट वगैरह कानूनी औपचारिकताओं को लेकर मैं जिस तरह के सवाल कर रही थी, मेरे साथ वाले भी आश्चर्यचकित थे। मुझे ध्यान आया कि जेसिका लाल के प्रकरण में डी न से छे छा की खबरें आई थीं। मैंने वहीं फैसला किया कि डी न टेस्ट गाजियाबाद में नहीं, दिल्ली में होगा।

Written by नरिमल पाठक
Monday, 10 October 2016 15:58

- बेटे के साथ हादसा, फिर आपके पति नहीं रहे। 14 साल के संघर्ष में आपको कभी लगा कि अब हिम्मत जवाब दे रही है?

लगता था कभी-कभी। बहुत सारी दिक्कतें थीं। मैं खुद नौकरी कर रही थी। आर्थिक दिक्कतें थीं। केस लड़ने के लिए अच्छे वकील की जरूरत होती है और पैसा भी लगता है। इसलिए कभी-कभी लगता था कि बस हो गया। पर ऊपर वाला समस्याएं हल कर देता था। फिर एक्सटेंज ऐसी आ गई थी, चार-पांच साल बाद, जब लगा कि अब छोड़ा, तो पिछली सब मेहनत बेकार चली जाएगी। भारती यादव के गवाही के लिए लाना सबसे थकाऊ प्रक्रिया साबित हुई। 30-40 आदेश हैं, ढेर सारी चिट्ठियां हैं। उसमें बहुत दौड़-भाग करनी पड़ी। उसको लाने में सफलता मिली, उससे भी आत्मविश्वास बढ़ा। तब तक मुझे यह फीडबैक मिलने लगा था कि जो मैं कर रही हूं, वह केवल एक केरेक्टर केस नहीं है। मीडिया ने साथ दिया, जिससे मुझे लगा कि मैं अकेली नहीं हूं।

- आपके सामने आपराधिक बैकग्राउंड और राजनीतिक रसूख वाले लोग थे। कभी धमकियां मिलीं? डर लगा?

हां, धमकियां मिलीं। शुरू में तो मुझे आपराधिक बैकग्राउंड के बारे में इतना पता भी नहीं था। यह पता था कि नेता हैं और जैसी धारणा है नेताओं के बारे में कि भ्रष्ट होते हैं। बस उतना ही पता था। विकास यादव के बारे में जानकारी थी कि जेसिका लाल केस में शामिल है, पर उसके आपराधिक इतिहास के बारे में पता नहीं था। नीतीश ने कभी इस तरह से जिक्र नहीं किया था अपने और भारती के अफेयर के बारे में। जब डीपी यादव पर मकोका के तहत मामला दर्ज हुआ, तब मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। तीन तरह के फोन और पत्र आते थे। कुछ मदद करना चाहते थे, पर सामने नहीं आना चाहते थे। दूसरे सीधे धमकी वाले होते थे कि आपको और आपके पति को बाइज्जत आपके बेटे के पास पहुंचा दिया जाएगा। और तीसरे होते थे, जो कहते थे कि हमने भी लड़ाई लड़ी, पर बर्बाद हो गए। ये सब अज्ञात थे, कोई खुलकर सामने नहीं आया, इसलिए मैंने भी ज्यादा तवज्जो नहीं दी।

- राजनीतिक दलों की ओर से किसी ने कभी मदद की पेशकश की?

नहीं। बिल्कुल नहीं। जिनको मैं व्यक्तिगत तौर पर जानती थी, जैसे कांग्रेस के नेता मोहसिना किदवई। उनकी बेटी और मैं साथ पढ़ी थे लखनऊ में। इस नाते वह जानती थीं। नीतीश की तेरहवीं में वह आई थीं। ऐसे ही कुछ और भी थे, पर वह केवल मिलने तक सीमित था। एक और नेता, जो उस समय भाजपा सरकार में महत्वपूर्ण मंत्री थे, उनके सबसे नजदीकी सहायक को मैं जानती थी। उन्हें जरूर मैंने फोन किया। वह मिलने भी आए, लेकिन जो सलाह उन्होंने दी, उससे मुझे बड़ी हैरत हुई। उन्होंने कहा, आप मीडिया के चक्कर में ज्यादा न पड़ें, इससे आप परेशानी में भी आ सकती हैं। अब मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूं कि मैंने उनकी सलाह नहीं मानी, वरना यह केस तो आगे बढ़ता ही नहीं।

- इस दौरान कभी विकास यादव, विशाल यादव या डीपी यादव से कहीं आमना-सामना हुआ?

उस तरह से तो नहीं, पर कोर्ट में तो वे रहते ही थे। डीपी यादव ट्रायल के दौर में नहीं आते थे। जब भारती आई, तब आए। बाद में, जब हाईकोर्ट में मामला चल रहा था, तब भारती आती थी। आखिरी बार जिस दिन फैसला आया, उस दिन सुप्रीम कोर्ट में मुझे उस परिवार से कोई नहीं दिखा। ट्रायल कोर्ट तक काफी लोग आते थे। पांच-सात को तो रोज देखते-देखते मैं पहचानने लगी थी। शुरुआत में अजीब लगता था, पर बाद में मैं नजरअंदाज करने

लगी□

- भारती यादव के व्यवहार ने आपको नरिाश कयि?

मुझे भारती से ज्यादा अपने बेटे नीतीश से नरिाशा हुई क उिसने ऐसी ल□की चुनी□ मुझे ऐसा लगता है क उिस रात, जब नीतीश की हत्या हुई, वह चाहता तो भारती के भाइयों को झूठ बोलकर बच सकता था□ लेकनि उसने भारती से संबंधों को स्वीकार कयिा होगा और तब उनकी बात ब□ी होगी□ मुझे देश की ऐसी बेटयिों से शकियत है, जो संपन्न घरों से हैं, अच्छे स्कूल-कॉलेज से प□ी हैं, अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम हैं, बावजूद इसके सच बोलने की हम्मित नहीं करतीं□ मुझे उसका बुरा लगा□ भारती को तो पता था उसका परविार कैसा है? नीतीश का तो तर्क होता था क इिसमें भारती की क्या गलती? वह तो वहां से नकिलना चाहती है□ वह अपने नाम के आगे यादव नहीं लगाती□ भारती सहि लखिती है□ अपने भवषि्य के लएि□ वह कुछ भी करती, पर नीतीश और अपने संबंधों के बारे में सच तो बोल सकती थी□ आखरि उसकी वजह से नीतीश की जान गई थी□

- आप खुद अच्छे घर से हैं, कॉन्वेंट से प□ी हैं□ आपके पत प्रिशासकीय सेवा में रहे□ क्या इस वजह से आपको कोई मदद मलिी?

शक्षिा बहुत ब□ा कारण है□ मुझे घर या स्कूल में जो शक्षिा मलिी, उसने मुझे हमेशा सवाल पूछने के लएि□ प्रेरति कयिा□ मैं चाहे कोर्ट में वकील हों या जानने वाले, उनसे सवाल पूछती रहती थी□ मुझमें यह आत्मवशि्वास था, जो हर व्यक्त मिें नहीं होता□ कोर्ट में ऐसे लोग मलिते थे, जन्हिें अपने केस के बारे में उतनी ही जानकारी होती थी, जतिना उनके वकील बताते थे□ दूसरा कारण डीपी यादव की वजह से इस केस में मीडयिा की दलिचस्पी बनी हुई थी□ राजनीत औिर अपराध का घालमेल होना□ आम आदमी अपराधी कसि्म के नेताओं से घृणा करता है□ मीडयिा को शायद नीतीश से कुछ सहानुभूत भिी थी.. फरि धीरे-धीरे मीडयिा के लोगों से मेरी भी अच्छी बनने लगी थी□ ज्यादातर उनमें नीतीश के ही उम्र वाले थे और घर पर उनका आना-जाना लगा रहता था□ पर प्रशासनकि तौर पर मदद मलिी हो, ऐसा मुझे नहीं लगता□ थो□ी-बहुत जान-पहचान के चलते कहीं सहूलयित हुई होगी, पर वह ऐसी नहीं□

- आपने कहा है क अिब आप ऑनर कलिगि के खलिाफ अभयिान में जु□ना चाहेंगी□ कसि तरह से करेंगी?

बहुत से सुझाव हैं, पर अभी अंतमि रूप से कुछ तय नहीं है□ मुझे लगता है क इिस पर रोक के लएि□ सख्त कानून की जरूरत है□ और जसि तरह का बहुमत इस समय सरकार के पास है, उसमें यह हो सकता है□ स्वयंसेवी संगठन सेमनिार वगैरह करते रहते हैं और उनमें मुझे बुलाया जाता है, तो मैं इस मसले को उठाना चाहूंगी और चाहूंगी क मिीडयिा भी इसमें साथ दे□ अगर इस वषिय पर कुछ कर पाई, तो यह इस केस की बहुत ब□ी उपलब्ध होिगी□ अपनी तरफ से मैं पूरी कोशशि करूंगी□

- आपको नहीं लगता क ऑिनर कलिगि के साथ यह मामला धनबल, बाहुबल के अहंकार का भी था?

बल्कुिल था...□ मैं राजनीत किे अपराधीकरण के खलिाफ भी ल□ना चाहूंगी□ पर □क समय में □क ही मुद्दा लूं, तो बेहतर है□ आप देखएि□, केंद्रीय

Written by नरि्मल पाठक
Monday, 10 October 2016 15:58

मंत्रमिंडल में बलात्कार का □क आरोपी पूरे दो साल रहा□ कोई कुछ नहीं कर पाया□ क्या इतना समय सुबूतों को नष्ट करने के लि□ पर्याप्त नहीं होगा? यह गलत है कि जब तक अपराध साबति न हो जा□, तब तक अपराधी नहीं मान सक्ते□ वधिायक, सांसद जैसे पदों पर बैठे लोगों के ऊपर तो इस तरह के गंभीर आरोप लगना ही इस्तीफे के लि□ पर्याप्त कारण होना चाहि□□ अगर ऐसे लोग □क चुनाव नहीं लड़ेगे, तो क्या हो जा□गा? वकिास या वशिाल यादव को भी यही लगता होगा कि उनके पति के खलिाफ कई मुकद्दमे होने के बावजूद वह सांसद बन सक्ते हैं, तो अपराध करने से उनका क्या बगि□ जा□गा? उनकी पूरी भाव-भंगमिा में यह अहंकार झलक्ता रहा है□ मैं अब भी आश्वस्त नहीं हूं कि यह कौन सुनश्चिति करेगा कि जतिने साल तक उन्हें जेल में रखे जाने की सजा हुई है, उतने साल वे रहेंगे□ इस बात की क्या गारंटी है कि किसी दनि किसी सार्वजनकि जगह पर वे लोग मेरे बगल में ख□ नहीं मलिेंगे?

- इस केस के चलते पछिले 14 साल में आपकी रोजमर्रा की जदिगी में किस तरह के बदलाव आ□?

अच्छी-खासी नौकरी कर रही थी□ केंद्रीय वद्यिालय संगठन में □जुकेशन ऑफसिर के तौर पर मेरा प्रोमोशन भी हो चुका था□ और अचानक बैकफुट पर आ ग□□ अदालतों की तारीखें, और दौ□-भाग वगैरह□ ऑफसि में लोग अच्छे थे, लेकनि वहां भी काम तो करना ही था□ यह □क और अहम मसला है कि आम आदमी कोर्ट में क्यों नहीं ल□ पाता? तारीख के लि□ आप छुट्टी लेते हैं और पता चलता है कि उस दनि सुनवाई हुई ही नहीं□ दूसरे दनि आधे दनि की छुट्टी ली, तो पता चला कि सुनवाई दोपहर बाद होगी□ पारविारकि, सामाजकि कार्यक्रम तो बलिकुल ही बंद हो ग□□ टीचर ट्रेनगि का मुझे जुनून था□ अब मैं वापस जाना भी चाहूं, तो नहीं जा पाऊंगी□

साभार: हनि□ दुस्□ तान